दिनाँक
04/03/24

सूचना

महाविद्यालय के समस्त छात्रों को सूचित किया जाता है कि 8 मार्च महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिला सशक्तिकरण विषय पर परिचर्चा आयोजित है जिसमें सभी की उपस्थिति अनिवार्य है।

स्थान - हिन्दी विभाग
समय - 1:00 बजे
विषय - महिला सशक्तिकरण

PRINCIPAL
Govt. Hamidia Arts & Commerce
Bhopal

06/03/24
विभागाध्यक्ष (हिन्दी)

दिनांक : 5/3/2024

Date
Page 4

परिचर्चा
हिन्दी विभाग
महिला सशक्तिकरण

आज दिनांक 5/3/2024 को हिन्दी विभाग में 'महिला दिवस' के उपलक्ष में परिचर्चा का आयोजन किया गया।

जिसमें हिन्दी, संस्कृत एवं उर्दू विभाग के प्राध्यापक उपस्थित रहे।

उर्दू विभाग की अध्यक्ष डॉ॰ अर्जुमंद बानो मैडम ने कहा कि पहले महिलाएँ पर्दे में रहा करती थीं औरतें प्रत्येक कार्य में पीछे रहती थीं। महिलाओं में बहुत काबलियत है उन्हें जब भी अवसर दिया जाए वे मर्दों के बराबर जाकर खड़ी हो सकती हैं। उन्होंने इस्मत चुगताई कुर्तुलीन हैदर जैसी महिलाओं का उदाहरण भी प्रस्तुत किए। अब महिलाओं खुलकर बोलने की सहूलियत प्राप्त हुई। आज वे काफी प्रगतिशील हो गई हैं। प्रत्येक क्षेत्र में वे क्रियाशील हैं।

डॉ॰ सुधीर रंजन सिंह ने कहा कि सभी लोगों को ब्यूटीमिथ जैसी पुस्तक को पढ़ना चाहिये। उन्होंने सीमोन द बऊआ को उद्धृत किया। अनेक विषयों पर "केस स्टडी" को पढ़ना व उन पर विचार करना चाहिये।

डॉ॰ शारदा सिंह विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग ने कहा कि महिलाएँ जहाँ कार्यरत हैं उन्हें वहीं आगे बढ़ना है।

PRINCIPAL
Arts & Commerce College, Bhopal

Page 2

सभी महिलाएँ सुदृढ़ होंगी। महिलाओं में चारित्रिक सौंदर्य बनाए रखना होगा।

डॉ॰ शीला ठाकुर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि – नारी को उपभोग की वस्तु नहीं मानना चाहिये। वे पुरुषों की तुलना में कहीं कमतर नहीं अतः आज लोगों की सोच बदलने की आवश्यकता है। जन साधारण में जागरुकता की आवश्यकता है। कहीं कहीं पढ़लिखकर नारी अपवाद भी बनी है। महिलाओं अदम्य क्षमताएँ हैं।

डॉ॰ संगीता कोलारवन्त ने कहा कि – प्राचीन काल में नारी अत्यंत सशक्त थी। मध्यकाल में वह उपभोग की वस्तु मान ली गई। उसे चारदीवारी में कैद कर दिया गया। राजाराम मोहन राय ने स्त्रियों की स्थिति में सुधार का प्रयास किया। आज महिलाएँ सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ी हैं। परंतु, पारिवारिक महिला की स्थिति आज भी दोयम दर्जे की है। माँ को बच्चों को स्वयं संस्कारित करना होगा।

डॉ॰ रहतु वर्मा ने कहा कि माँ ही अपने बच्चे को पूरी तरह से संस्कारित कर सकती है, पहले की तरह ही अपने पड़ोसी की रोक टोक का बुरा नहीं मानना चाहिये। नारी की अस्मिता पर जब भी चोट पड़ी उसने काली व दुर्गा का अवतार लिया। वो लोक निंदा की परवाह भी नहीं करती।

डॉ॰ रानू तिवारी ने कहा — महिला का पढ़ा लिखा होने पर वे स्वयं निर्णय

लेने में सक्षम हुई हैं। उन्हें दूसरों के साथ-साथ खुदके स्वास्थ्य पर ध्यान देना है। यह उसे सशक्त बनाएगा। उसे आर्थिक रूप से सक्षम रहना होगा। उन्हें मानसिक रूप से दुरुस्त होना है।

अंत में डॉ० रचना सैलंग ने कहा कि हमें महिलाओं को सशक्त बनाने हेतु स्वयं प्रयासरत रहना होगा। महिला परिवार की धुरी है और उसके प्रयास ही घर, परिवार, देश और समाज को आगे बढ़ाएँगे उसकी साक्षरता ही समाज में परिवर्तन ला सकती है। शर्म आँखों में होती है वह लिंग विशेष से आबद्ध नहीं है सभी की आँखों में शर्म होना चाहिये।

कार्यक्रम का समापन करते हुए सभी को डॉ० शारदा सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

डॉ० शारदा सिंह
विभागाध्यक्ष

1. डॉ० अर्जुमंद बानो
2. डॉ० सुधीर रंजन सिंह
3. डॉ० रचना सैलंग
4. डॉ० शीला ठाकुर
5. डॉ० संगीता कोलावत
6. डॉ० ऋतु वर्मा
7. डॉ० रानू तिवारी
8. डॉ० सीमा परवीन

PRINCIPAL
Govt. Hamidia Arts & Commerce College